SAINT TERESA

सन्त भूषण टेरिसा

मूल्य १½ आना

सन्त भूषण टेरिसा ।

(१)

बालिका ।

बालिका का नाम टेरिसा है। एक अत्यन्त पवित्र और धार्मिक परिवार में इसका जन्म हुआ है। बचपन से टेरिसा की प्रवृत्ति धर्म की ओर थी। ईश्वर के साक्षात् दर्शन करने की उसकी अत्यन्त इच्छा थी। टेरिसा अपने मन के विचारों को अपने भाई रोड्रिगो पर प्रकट करती थी। दोनों भाई बहिन में अपार प्रेम था। टेरिसा का कहना था कि ईश्वर का दर्शन प्राप्त करने के लिये शहीद बनने की अत्यन्त आवश्यकता है। परन्तु भाई अपनी बहिन के इस विचार से सहमत नहीं था, किन्तु बहिन के उन्नति के मार्ग में कण्टक भी नहीं बनना चाहता था।

एक सुन्दर प्रातःकाल को दोनों भाई बहिन धर्म के नाम पर अपने प्राणों की आहुति देने के लिये, मूर लोगों के देश को विदा हुए। घर से अभी बहुत दूर भी न जाने पाये थे कि उनके चचा ने उनको आ पकड़ा और भाई और बहिन की विनती पर कुछ ध्यान न दे उनको दुःखित माता के पास ले गया।

माता बहुत देर से बच्चों को ढूंढ़ रही थी। बच्चों को पाकर उसके हृदय में अपार शान्ति हुई। भाई ने तुरन्त अपने अपराधों के लिये क्षमा मांगली। किन्तु बहिन टेरिसा ने कहा, 'मैं ईश्वर के पास जाना चाहती हूं और सोचती हूं कि उसके पास जाने के लिये मुझे मर जाना चाहिये।

टेरिसा की माता बड़ी शान्त तथा धर्मी स्त्री थी। वह टेरिसा से कहने लगी; प्यारी बेटी ईश्वर के दर्शन करने के लिये पवित्र जीवन की आवश्यकता है। ईश्वर की सेवा सच्चे मन से करो। उसके पवित्र नियमों को भंग मत करो। यही ईश्वर के पास पहुंचने का सच्चा मार्ग है।

बहुत कुछ उपदेश देने पर टेरिसा इन बातों को कुछ कुछ समझने लगी। अनेक साधु सन्तों की जीवनी पढ़ कर उसने सन्यासिनी बनने का निश्चय किया। अपने भाई की सहायता से वह अपने बाग़ में ही एक मठ बनाने की कोशिश करने लगी। किन्तु इस कार्य में निपुणता न होने से उन दोनों को मठ स्थापित करने में भारी निराशा हुई। वे पत्थर के ऊपर पत्थर रखते जाते थे किन्तु सिमेन्ट या चूना इत्यादि न होने से सब पत्थर सरासर गिर पड़ते थे। अन्त में उदास हो मठ का बनाना ही बन्द कर दिया।

ईश्वर के नियमों को भंग न करना और उसकी सेवा में अपना सर्वस्व लगाने का उसने संकल्प किया। उसके पास बहुत धन भी नहीं था। परन्तु जितना भी उसको मिलता वह कंगालों को दान कर देती थी। अपनी नित्य की प्रार्थना में वह अधिक ध्यान देने लगी और जो कोई उसे मिल जाता उससे बड़ी नम्रता से बातचीत करती थी। यह सब कार्यक्रम हम सब लोगों को अत्यन्त सरल मालूम पड़ते हैं किन्तु छोटी बालिका को इसके लिये भारी स्वार्थ त्याग करना पड़ा। उसे दूसरों की सेवा करने में आनन्द आने लगा। उसके हृदय में इस प्रकार सेवा करने से अपूर्व शान्ति होने लगी। और उसके सुन्दर मुख पर प्रभु का अपूर्व तेज दिखाई देने लगा।

माता ने अपने परिवार को धार्मिक बनाने की अत्यन्त चेष्टा की। पवित्र, शान्त चित्त और प्रभु भक्त माता स्वयं अपने कुटुम्ब के लिये आदर्श स्वरूप थी। टेरिसा के नौ भाई और तीन बहिनें थीं, यह माता के ही धर्म शिक्षा का फल है कि परिवार का प्रत्येक जन बचपन से ही अत्यन्त धार्मिक बन गया। टेरिसा के पिता का सर्वत्र में मान होता था। टेरिसा ने एक स्थान पर अपने जीवन चरित्र में लिखा कि उसका पिता सत्यवादी, शान्त चित्त तथा प्रेम करनेवाला था।

जब टेरिसा की अवस्था १२ वर्ष की हुई उसकी माता का स्वर्गवास हो गया। टेरिसा के हृदय में भारी धक्का लगा। अब कौन उसे धर्म शिक्षा देगी यह उसे चिन्ता होने लगी। अब कोई उसका दुःख सुख सुनने वाला नहीं रहा। माता के विरह में व्याकुल बालिका टेरिसा ने कुंवारी मरियम के चरणों में माथा नवा कर प्रार्थना करते हुए कहा, 'आज से तुम मेरी माता हुई। मैं तुम्हारी सेवा में रत रहूंगी।'

समस्त परिवार में टेरिसा के हृदय में माता के वैकुण्ठवासी होने से भारी धक्का लगा। अभी वह छोटी थी प्रत्येक विषय में उसको माता से शिक्षा लेने की असीम आवश्यकता थी उसको सब भाई बहिन प्यार की दृष्टि से देखते थे। घर के बाल बच्चे सब मिलकर जब खेल कूद करते थे तब उसे 'महारानी' का पद देते।

अड़ोस पड़ोस में उसके अनेक मित्र बन गये। वे रात दिन आ आ कर उसके खेल में भाग लेते। अपनी उम्र की बालिकाओं के साथ खेल कूद में टेरिसा इतनी रत हो गई कि वह अपने को बिलकुल भूल गई। उसने धर्म सम्बन्धी पुस्तकों को पढ़ना छोड़ उपन्यासों को पढ़ने में मन लगाया। समस्त दिन

अपना शृङ्गार करने तथा लोगों के चित्त में अपना आधिपत्य जमाने में उसके दिन व्यतीत होने लगे। हाय! दुष्ट संगति का हमारे चरित्र में कितना भयंकर असर पड़ता है। मनुष्य को समझ विचार कर अपने मित्रों को चुनना चाहिये।

टेरिसा के पिता ने देखा कि कुसंगति में पड़ने से उनकी प्यारी पुत्री अब देव मन्दिर में बहुत कम जाती है, अपनी प्रार्थनाओं में मन नहीं देती और न धर्म कर्म के कामों से उसको रुचि है। टेरिसा की बड़ी बहिन को भी इन बातों को देखकर बड़ा दुःख हुआ। उसका शीघ्र विवाह होने वाला था। उसकी अनुपस्थिति में टेरिसा का भाइयों के साथ अकेले में घर में रहना उचित नहीं समझा गया। वहिन का विवाह हो जाने पर टेरिसा को स्कूल में पढ़ने के लिये घर से बिदा लेनी पड़ी।

स्कूल में प्रवेश करते ही घर की याद, मित्रों की जुदाई टेरिसा को दुःख देने लगा। टेरिसा का मन पढ़ने लिखने में बहुत लग गया। कुमारी त्रिसीनो उस पाठशाला की अध्यक्षा थी। अपने नम्र स्वभाव तथा धार्मिक प्रवृत्ति के कारण वह सब लोगों में आदर पाती थी। टेरिसा भी उसको देखते ही उसकी भक्त बन गई।

अपने जीवन चरित्र में अपनी अधक्षा के विषय में टेरिसा ने लिखा है, 'ओह! कितनी अद्भुत शक्ति से वह परमेश्वर के विषय में हमें व्याख्यान देती और कितनी शान्ति से मैं उनके वाक्यों को सुनती थी!'

पाठशाला में रहते हुए उसकी रुचि फिर से धर्म की ओर फिरी। धार्मिक बन कर अपने को प्रभु के चरणों में अर्पण करने की उसकी इच्छा होने लगी, परन्तु अब वह सन्यासिनी

होना नहीं चाहती थी। मठ की समस्त 'बहिनें' टेरिसा को बहुत प्यार करती थीं और वह शीघ्र मित्र बनाने में बड़ी चतुर थी। बहिनों के साथ मठ की पाठशाला में रहने से उसके जीवन में भारी परिवर्त्तन होने लगा।

डेढ़ वर्ष के बाद टेरिसा को रोग ने आ घेरा। वह अपने पिता के पास भेज दी गई। स्वास्थ्य लाभ करने पर वह अपनी विवाहिता बहिन के घर गई। बहिन ने टेरिसा की देख भाल अच्छी तरह से की। जब पिता के घर लौटने का समय आया, बड़ी बहिन ने टेरिसा को कुछ दिन और अपने घर में रखना चाहा। पिता टेरिसा के बिना घर में अकेले रहना पसन्द नहीं करते थे इस वास्ते टेरिसा को अन्त में पिता के घर जाना पड़ा। घर लौटते समय टेरिसा अपने चचा के घर में रही। चचा एक साधु पुरुष थे। अपनी धार्मिकता के कारण समस्त प्रदेश में प्रख्यात थे उसने अपने भाई से बहुत विनय कर टेरिसा को कुछ दिनों के लिये अपने संग रख लिया।

टेरिसा का चित्त चचा के साथ रहने में घबड़ाता था। उसका अधिक समय प्रार्थना और पढ़ने लिखने में व्यतीत होता था। एक दिन उसने टेरिसा को अपने सामने पढ़ने की आज्ञा दी। सेंट अगस्टीन, सेंट ग्रीगोरी और सेंट जीरोम के पत्र पढ़ने में उसने ख़ूब चित्त लगाया। दिन पठन पाठन में अच्छी तरह व्यतीत होने लगे। ईश्वर का दर्शन पाने की वह पुरानी इच्छा फिर उसके चित्त में जागृत हो उठी। संसार के ऐश्वर्य्य तथा सुख भोगों से उसकी प्रवृत्ति हट गई। उसने शीघ्र समझ लिया कि मनुष्य को इन सुख भोग के चीज़ों से शांति नहीं मिल सकती है। उसने यह अच्छी तरह से समझ लिया कि स्वार्थ-

त्याग करके अपने को प्रभु के चरणों में अर्पण कर देता है वही धन्य है, वही सुखी है और वही अनन्त जीवन का भागी है।

किस प्रकार ईश्वर के दर्शन हों बस इसी बात की वह खोज करने लगी।

---

(२)

अभिवादन।

टेरिसा वीर स्वभाव की थी। चचा के साथ होर्टीगोसा के बाग़ में धर्म सम्बन्धी पुस्तकों को पढ़ते पढ़ते उसके हृदय में धार्मिक बनने की प्रवृत्ति प्रबल हो उठी। जो बात वृद्ध चचा ने चालीस पचास वर्ष के अनुभव से सीखी थी वह एक दो दिन सतसंग से टेरिसा ने जान ली—वह मुख्य बात थी ईश्वर को प्राप्त करना।

स्वर्ग में जाने का सब से सुगम रास्ता कौन है? यही प्रश्न टेरिसा हर घड़ी अपने से करती थी। वह सन्यासिनी बनना नहीं चाहती थी किन्तु फिर भी ईश्वर से प्रार्थना करती कि यदि सन्यासिनी बनना हो उसके भाग्य में है तो वह बनने के लिये तत्पर है। अभी हम ऊपर लिख चुके हैं कि बाल्यकाल में टेरिसा रोगग्रस्त हुई थी। इससे उसका देह निर्बल हो गया था। उसे इस बात का पता चल गया था कि धार्मिक जीवन ही सब से उत्तम और महत जीवन है। अब रही धार्मिक जीवन की कठिनाइयां और स्वार्थ त्याग करने की बात—संसार में अनेक धार्मिक जन हुए हैं, उन्हें अनेक विघ्न बाधाओं के होते हुए कठिनाइयां उठानी पड़ीं और स्वार्थ त्याग करना पड़ा, तब क्यों नहीं मैं भी इसी प्रकार कार्य करूं? क्या मैं अपने प्रभु के

लिये, जिसने अपने प्राण तक मेरे लिये त्याग दिया, इतना कष्ट भी नहीं सह सकती ? क्या वह जगत का बनानेवाला जिसके लिये मैं यह जीवन अर्पण करने वाली हूं मुझे सब कष्ट सहने की शक्ति नहीं देगा ?

इसी प्रकार अपने चित्त में सब बातों का विचार कर और स्वयं सब बातों पर तर्क, वितर्क कर टेरिसा ने धार्मिक बनने की इच्छा प्रगट की। अब पिता से कहना बाक़ी रह गया। टेरिसा जानती थी कि यह सुनकर उसके पिता को अत्यन्त दुःख होगा। उसके पिता—'डोन एलोनसों' ने सब बात सुनकर 'हां' नहीं कहा। वह सहमत नहीं हुआ और टेरिसा की विनय को योंही टाल दिया। तर्क का भी उसके हृदय मे कुछ असर नहीं हुआ तब टेरिसा ने अपनी बड़ी बहिन से इस विषय में पिता की आज्ञा दिलाने को कहा। उसके भाई लोग सब मिलकर उसकी इच्छानुसार पिता से विनती करने लगे। पिता ने सब से कहा—टेरिसा मुझे बहुत प्यारी है, मैं उसे अपने से दूर करना नहीं चाहता और न मैं इस विषय में तुम्हारी बातें ही सुन सकता हूं।

जितना पिता अपनी बात में पक्का था उतना ही टेरिसा भी अपनी बात में पक्की थी। परन्तु घर छोड़ने की वेदना, मित्रों का विछोह उसे बहुत सताता था।

एमीला नगर के समीप ही मनोहर जङ्गल के मध्य कारमीलाइट का एक मठ था। इस मठ में कुछ ही महीने पहिले टेरिसा की एक सहेली अपना जीवन ईश्वर की सेवा में अर्पण कर दिया था। अपनी इस सहेली से टेरिसा को इस बात का ज्ञान हुआ कि धार्मिक जीवन व्यतीत करने में कैसी शान्ति

मिलती है और कैसे आनन्द का अनुभव होता है। भाइयों तथा बहिनों को उससे पूर्ण सहानुभूति थी। अन्त में घर से विदा लेने का समय आया। अपने जीवन चरित्र में टेरिसा लिखती है कि घर छोड़ने की वेदना मृत्यु की वेदना से भी भयंकर थी।

मठ में प्रवेश करते ही उसके हृदय में अद्भुत शान्ति पैठ गई। प्रातःकाल संघ में प्रवेश करने पर उसके सिर के बाल काटे गये। और उसको पहिनने को नये प्रकार के कपड़े दिये गये। देवस्थल में जा उसने घुटने के बल खड़े होकर प्रार्थना की और अपने को सर्वदा के लिये प्रभु के हाथों में अर्पण कर दिया। कुछ दिनों के बाद उसका पिता स्वयं मठ में आया और उसने अपनी अनुमति उसको दे दी। पिता और पुत्री में पहले से भी अधिक प्रेम हो गया। पिता का आशीर्वाद पाकर टेरिसा को बड़ी शान्ति मिली। आज मठ में पिता ने स्वयं आकर टेरिसा से धर्म शिक्षा ग्रहण की सारे कुटम्ब के लिये मठ एक नवीन ज्योति का काम देता था। टेरिसा के कुटम्ब का प्रत्येक जन अपनी अपनी कठिनाइयां दूर करने के लिये मठ में आता था। टेरिसा सब को सान्त्वना देती, सब की समस्याओं को हल करती और सब को प्रसन्न चित्त कर घर लौटा देती थी। उसका भाई एनटोनियो की कभी कभी अपनी बहिन से धार्मिक विषय में शिक्षा लेने आता था। थोड़े दिनों के बाद पिता अपनी सब से छोटी बेटी को टेरिसा के पास संघ में छोड़ आया वहां टेरिसा की देखरेख में उसकी शिक्षा होने लगी।

क्या संघ के क्या बाहर के लोग टेरिसा को देख कर बड़े प्रसन्न होते थे। वह बड़ी भक्ति पूर्वक ईश्वर की आराधना करती और अपने कामों को बड़ी बुद्धिमानी से पूरा करती थी। उसके मुंह में एक अपूर्व शान्ति विराजती थी। उसके मुंह के

तेज को देखकर मठ की सब बहिनें बहुत आश्चर्य करतीं और उसके भविष्य के विषय में बड़ी बड़ी आशायें रखती थीं।

टेरिसा को दूसरों की सेवा करने में अपूर्व आनन्द प्राप्त होता था। वह सर्वदा ही इस सेवा वृत्त में तत्पर रहती थी वृद्ध और अङ्गहीन तो उसके विशेष प्रेम के भाजन थे। रात्रि को सोने से पहले जब वह प्रभु के दरबार में प्रार्थना करती तो प्रभु से उन सब रोगियों और अनाथों के लिये प्रार्थना करती। यदि किसी दिन बहुत कम लोग उसे सेवा करने के लिये मिलते तो उस रात उसे बड़ी बेचैनी होती थी।

वह अपनी सेवा के लिये इतनी प्रख्यात हो गई कि चिकित्सालय से डाक्टर लोगों ने उसे सेवा के काम में नियुक्त कर दिया। वह रोगियों से प्रेम करती और रोगी उसको प्यार करते थे। वह कभी सेवा के काम से थकती नहीं थी। घिनौने काम करने से भी उसे कभी कष्ट नहीं होता था।

एक बार एक रोगी किसी भयंकर रोग से बीमार पड़ गया। उसके सारे शरीर में बड़े बड़े घाव हो गये थे। टेरिसा ने जब देखा कि और बहिनें वहां उसके पास नहीं जातीं और उसके रोग से घृणा करती हैं। तब उसने उस रोगी की विशेष रूप से सेवा करनी आरम्भ की। वह उसके घावों को पानी से साफ़ करती उसके पास घन्टों बैठ कर उसको तसल्ली देती। और ईश्वर से बार बार उसके लिये प्रार्थना करती थी।

(३)

ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

थोड़े ही दिनों के बाद वह स्वयं बीमार पड़ गई। वह कुछ भी अपनी चिन्ता नहीं करती। सङ्घ के सभी लोग उसके विषय में चिन्ता करने लगे। स्वयं दूसरों की सेवा करने वाली नवयुवती टेरिसा आज स्वयं चिकित्सालय में रोग शय्या पर व्याकुल पड़ी है। वह इतनी निर्बल हो गई थी कि उससे पढ़ा-लिखा भी नहीं जाता था। थोड़े दिनों के लिये उसकी पूजा पाठ सब कुछ छूट गया।

टेरिसा ने एक स्थान पर अपने जीवन चरित्र में लिखा है कि ईश्वर ने आज तक मुझे नित्य अच्छी अच्छी वस्तुएं ही दी और आज वह मुझे रोगी बना मेरी परीक्षा करता है। वह बड़ी गम्भीरता से अपने कष्ट को सहन करती और अपनी सहेली बहिनों को बहुत कम कष्ट देती थी।

टेरिसा के पिता 'डोन एलोनसो' ने एक एक करके अनेक डाक्टर उसे देखने को भेजे। पर सब ने कहा रोग भारी है। उसका अच्छा होना कठिन है। अन्त में पिता ने निराश हो। उसे एक 'डाक्टरनी के पास ले जाने का निश्चय किया। यह डाक्टरनी अपनी चतुरता के कारण प्रख्यात थी।

संघ की बहिनों को अपने घरों को जाने की आज्ञा थी। टेरिसा पिता के साथ अपनी चिकित्सा के लिये गई। पिता ने कुछ काल के लिये टेरिसा को उसकी बड़ी बहिन मरियम के पास रक्खा। मठ से समय समय पर और बहिनें भी आ आ कर टेरिसा की सेवा करती थीं।

भारी भूल ।

पिता को टेरिसा की अवस्था देखकर अत्यन्त दुःख हुआ। उसने 'होर्टिगोसा' नामक स्थान में टेरिसा की बहुत सेवा की। अत्यन्त असाध्य वेदना की अवस्था में भी टेरिसा ने प्रार्थना करने का दृढ़ संकल्प किया। दुःख और वेदना की अवस्था में उसने अनुभव से यह ज्ञान प्राप्त कर लिया कि धैर्य धरना और हंसमुख रहना अमूल्य वस्तु है। प्रार्थना की पुस्तक की सहायता से उसने नित्य पुनः प्रार्थना करना आरम्भ कर दिया।

वह सदा प्रसन्न चित्त रहती थी। बड़ी बहिन के दो बालक कभी कभी उस को भेटने आते जाते थे। टेरिसा ने अपना सर्वस्व प्रभु यीशु मसीह के चरणों में अर्पण कर दिया था। उस का यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि प्रभु उस की छाया के निकट रह कर उस की रक्षा करता है। पिता और भाइयों ने सोच लिया कि टेरिसा उन के हाथों से अब निकल गई, अब वह प्रभु की है। इस लिये उन्हों ने उसे ईश्वर के ही भरोसे में छोड़ दिया। अत्यन्त वेदना होने पर भी वह सदा हंसमुख बनी रहती थी।

महीने व्यतीत हो गये, किन्तु टेरिसा के अच्छे होने के कोई लक्षण दीख नहीं पड़े। वायु परिवर्त्तन से टेरिसा के स्वास्थ्य में कुछ अन्तर नहीं पड़ा। अब वसन्त ऋतु आई। टेरिसा को बड़े चतुर डाक्टरों के पास ले जाने का समय निकट आया। धीरे धीरे टेरिसा अत्यन्त निर्बल हो गई थी, इस लिये टेरिसा को गाड़ी में धीरे धीरे यात्रा करनी पड़ी। जिस डाक्टरनी के विषय में टेरिसा ने और उस के पिता ने बड़ी बातें सुनी थी वह इस रोग के विषय में अज्ञान निकली। टेरिसा की हालत और भी

बिगड़ गई । रही सही शक्ति भी उस के इलाज से जाती रही । पिता निराश हो टेरिसा को मृत्यु की अवस्था में घर वापस ले आये ।

देव उपासना का समय निकट आया । टेरिसा ने अपने पाप स्वीकार करने की इच्छा प्रगट की । पिता ने समझा अब मृत्यु निकट है । टेरिसा के निकट जाकर उसे धैर्य दिया और कहा कि भय की कोई बात नहीं । उस ने पादरी को टेरिसा के पाप स्वीकार सुनने के लिये वहीं बुलाया ।

उसी रात को टेरिसा बेहोश हो गई और उसी दशा में तीन दिन तक रही । समस्त नगर में यह समाचार फैल गया कि टेरिसा की मृत्यु हो गई है । देवस्थल में उस की समाधि के लिये स्थान निश्चय किया गया और मठ से दो बहिनें उस के अन्तिम संस्कार देखने के लिये भेजी गईं । सब डाक्टरों ने भी आशा करनी छोड़ दी । केवल पिता ने अभी आशा नहीं छोड़ी । पिता रात दिन उस की शय्या के निकट घुटने टेक कर प्रार्थना करता था उसे यह बड़ा खेद था कि टेरिसा की विन्ती करने पर भी उसने पादरी को पाप सुनने के लिये नहीं बुलाया । परमेश्वर ने पिता की प्रार्थना सुन ली । चौथे दिन टेरिसा ने आंखें खोलीं । पिता, भाई और बहिनों को शय्या के निकट देख कर वह मुसकुराई । उस ने फिर पिता से पादरी को बुलाने के लिये कहा पिता ने उस का कहना मान कर शीघ्र पुरोहित को पाप स्वीकार सुनने के लिये बुला भेजा ।

टेरिसा ने अपने सब पाप स्वीकार किये । उस के हृदय में भारी शान्ति आ गई । किन्तु रोग में कुछ कमी नहीं हुई । टेरिसा ने इसी अवस्था में फिर मठ में जाने का निश्चय किया । पिता को उसकी अन्तिम इच्छा का पालन करना पड़ा—और वह उस

को मठ में ले गया। आठ महीने की कठिन बीमारी के बाद आज वह थोड़ी थोड़ी चलने योग्य हुई।

उस के मुंह में गम्भीरता आ गई थी। अत्यन्त निर्बल होने पर भी वह सदा हंसमुखही रहती थी। उस का देह तो निर्बल हो गया था किन्तु आत्मा अत्यन्त बलिष्ट हो गई थी। उस की बात सुनने को प्रत्येक जन का मन चाहता था—सब उस के पास जाकर शान्ति लाभ करते थे।

टेरिसा अभी केवल २४ वर्ष ही की थी। प्रभु की सेवा करने के लिये वह बड़ी आतुर होने लगी। संसार के डाक्टर उसके रोग से निराश हो गये थे। अब समय वैकुण्ठवासी डाक्टर से चिकित्सा कराने का था। प्रार्थना में तो उसका पूर्ण विश्वास था किन्तु वह वैकुण्ठवासी साधु सन्तों की सहायता प्रार्थना करने में लेना चाहती थी। प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसने स्वास्थ्य लाभ किया।

टेरिसा ने स्वास्थ्य लाभ के लिये रात दिन प्रार्थना की। प्रभु की कृपा से वह अच्छी होकर उसकी सेवा करने लगी। वह रात दिन प्रभु से यही प्रार्थना करती थी कि 'हे भगवन तेरी इच्छा के अनुसार मैं काम करूं' इसी प्रकार प्रार्थना करते करते निर्बल, दुःखित और रोगियों की सेवा करते करते १८ वर्ष व्यतीत हो गये।

मठ की बहिनें अत्यन्त पवित्र जीवन व्यतीत करती थीं। मठ में दर्शकों को आने की आज्ञा थी। चौदहवीं शताब्दि में या उससे पहले जो कट्टर नियम थे अब उन नियमों में भारी परिवर्त्तन हो गया था। 'बहिनों' के मित्र, भाई बहिन, माता पिता, जब कभी चाहते संघ में आ सकते थे।

टेरिसा के चंगा हो जाने के बाद अनेक दर्शक उस से मिलने आए। टेरिसा यह अच्छी तरह जानती थी कि इस प्रकार लोगों को प्रत्येक घड़ी आने देने से प्रार्थना में मन नहीं लगेगा। प्रार्थना के लिये एकान्त की आवश्यकता है। करुण हृदया टेरिसा ने फिर भी अपने शुभचिन्तकों को अपने पास आने से नहीं रोका।

जो लोग उसके पास आते थे शान्ति प्राप्त करते थे। उसके उपदेशों से दुःखित, उदास जनों को अत्यन्त शान्ति मिलती थी। चिकित्सालय में रह कर रात दिन प्रभु की प्रार्थना से उसने जो आत्मलाभ किया था उसका वह अब प्रचार करने लगी। उसके उपदेश अत्यन्त मनोहर और हृदय को शान्ति देने वाले होते थे।

अभी टेरिसा को बहुत सीखना था। किन्तु उसने इस नये मार्ग पर प्रवेश अभी से कर लिया था यह पथ कठिनाइयों से परिपूर्ण था उस पर चलना बहुत कठिन काम था। किन्तु टेरिसा ने बिना पूर्णता प्राप्त किये ही चलना आरम्भ कर दिया। उसको शीघ्र ही अपनी भारी भूल का पता मिल गया। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि अभी उसके जीवन में भारी कमी है। एक बार एकाएक ध्यान करने पर प्रभु यीशु ने दर्शन देकर उसको आगाही दी।

टेरिसा का पिता बीमार पड़ गया। उस के लिये संदेशा भेजा गया और वह आ पहुंची। पिता तो वृद्ध था ही टेरिसा की धर्म शिक्षा के बल से उसने बड़े धैर्य्य से संकटों का सामना किया।

मृत्यु निकट थी। टेरिसा एक ओर पुरोहित के संग पिता के लिये प्रार्थना करने लगी। मित्रों के बार बार आने से उसकी

प्रार्थना ठीक रूप से नहीं हो सकी। किन्तु फिर भी सब प्रलोभनों से विजय प्राप्त कर जितेन्द्रिय बन ४० वर्ष की अवस्था में उसको आत्मा में प्रभु का अपूर्व प्रकाश प्रवेश कर गया। उसके मुंह में अपूर्व आभा प्रगट होने लगी।

---

(५)

भगवान या शैतान।

कठिन दुसाध्य रोग से ग्रसित होने पर भी टेरिसा ने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा। सांसारिक प्रलोभनों से भयंकर युद्ध करने में ईश्वर की दया से उसे सब विषयों में विजय प्राप्त हुई। सांसारिक ऐश्वर्य्यों से उसको विरक्ति हो गई। ईश्वर का नाम हर घड़ी उसके होंठों पर रहता था। ईश्वर उसके हृदय कानन में निवास करता था। उसकी पवित्र ज्योति टेरिसा के मुंह में प्रकाशित होने लगी। वह ईश्वर में विलीन हो गई। ईश्वर उसके हृदय में वास करने लगा।

प्राय: इसी काल में स्पेन के साधु फ्रांसिस बोरगिया ने एक विद्यालय खोलने का निश्चय किया। साधु इगनेटस के दो पुत्र जो अपनी विद्वत्ता, पवित्रता और सत्यता के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध थे उस विद्यालय की देखरेख के लिये नियुक्त किये गये। टेरिसा की इच्छा उनसे मिलने और उनसे ज्ञान उपार्जन करने की हुई। वह उनको देखने और उनसे परामर्श लेने के लिये व्याकुल हो उठी।

अचानक वह विचार करने लगी कि मैं पापी इतने सम्मान के योग्य कैसे हो सकती हूं। क्या कुवासनायें तो मुझे वहाँ जाने के लिये वाधित नहीं कर रही हैं ?

टेरिसा यह क्योंकर सोचने लगी, इसका एक विशेष कारण था। इस घटना के कुछ ही दिन पूर्व एक सन्यासिनी जो कौर-डोमा नगर के मठ में रहती थी अपनी धार्मिकता के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध हो गई थी। तीस वर्ष तक उसी दशा में रह कर एक दिन अचानक उसने लोगों से कहा कि उसके जीवन की सब बातें मिथ्या हैं वह केवल कल्पनायें हैं--वह अब अपने पापों के लिये घोर पश्चात्ताप कर रही है।

टेरिसा ने सोचा कि यदि एक सन्यासिनी इस प्रकार शैतान के जाल के प्रपञ्च में आ सकती है, तो अवश्य दूसरी भी आ सकती है। उसने यह सुना था कि 'जेस्यूर' का पुरोहित-वर्ग अपनी विद्वत्ता का शानी नहीं रखता और लोगों को सुन्दर सुन्दर उपदेश देकर कृतार्थ करता है। टेरिसा के मन में फिर अनेक प्रकार की आशङ्कायें आने लगीं—वह कहने लगी कि अभी मैं उन लोगों से बोलने तथा परामर्श करने के योग्य नहीं हुई हूं।

एमोला ग्राम में एक पवित्र वृद्ध व्यक्ति रहता था। टेरिसा उसको बहुत अच्छा मानती थी। वह केवल पवित्र ही नहीं किन्तु बड़ा चतुर और टेरिसा के पिता का बड़ा मित्र भी था। उसका नाम 'जान फ्रान्सिसको डो. सालसिडो था। टेरिसा ने अपनी कठिनाइयों को उसके सामने प्रगट करने का निश्चय किया। टेरिसा की बातों को बड़े ध्यान से सुनकर उसने टेरिसा को डाकूर डालू के पास जाने का उपदेश दिया। बातचीत करने

से कुछ फल नहीं निकला । क्योंकि टेरिसा धमशास्त्र में धुरन्धर विद्वान् डाक्टर के सामने अपनी इच्छा प्रगट नहीं कर सकी। एक आन्तरिक विचार ने उससे कहा कि इस आदमी के द्वारा उसकी कुछ उन्नति नहीं होगी। वह पवित्र व्यक्ति उसकी यह बात सुनकर अत्यन्त निराश हुआ। उसने बहुत कुछ सोच विचार कर टेरिसा से अपनी बातें लिख कर डा० डाजा के पास भेजने को कहा।

टेरिसा ने ऐसा ही किया। उसने अपनी कहानी लिखकर उस वृद्ध के हाथ में दी। इसका परिणाम भयङ्कर हुआ। डा० डाजा ने सारी चिट्ठी को पढ़कर कहा कि टेरिसा के हृदय में शैतान अपना राज्य स्थापित करना चाहता है। ये समस्त विचार कुवासना ही का फल हैं। टेरिसा को उचित है कि वह 'जेरिवट' लोगों की सहायता ले।

टेरिसा के हृदय में इससे भारी आघात पहुंचा। उससे अब प्रार्थना भी नहीं हो सकी। पैद्रानो नामी पुरोहित को उसने पाप-स्वीकार सुनने के लिये बुला भेजा।

जेरिवट लोगों के लिये सब बा॑ पानी की तरह साफ़ थीं। उन्होंने देखा कि नम्र पवित्र हृदया टेरिसा के चित्त में परमेश्वर की कृपा हो रही है। परमेश्वर ने टेरिसा के हृदय में अपना अधिकार जमा लिया है। अब टेरिसा का धर्म और कर्त्तव्य है कि वह अपने को उसके हाथों में अर्पण कर दे।

टेरिसा की जान में जान आई। जो उस के हृदय में भयानक आघात पहुंच गया था वह दूर हो गया उसके हृदय में अपार शान्ति विराज गई। साधु फ्रांसिस बोरगिया कौलेज का निरीक्षण करने अमीला में आया। पैद्रानो के कहने से वह मठ में टेरिसा

को देखने गया, मठ में सन्यासिनियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। आय कम और व्यय अधिक होने से सन्यासिनियों के परिवारों से धन की विज्ञप्ति की गई। सन्यासिनियों को आज्ञा दी गई कि अपने मित्र वर्गों में जाकर मिलें और उनके सब प्रकार के त्योहारों में सम्मिलित हों।

टेरिसा को अपनी इच्छा के विरुद्ध इन नियमों की पालना करनी पड़ी। ज़ब वह अपने एक सम्बन्धी के घर में रहती थी उसका परिचय डोना नामी एक २५ वर्ष की नवयुवती विधवा से हो गया। टेरिसा की गम्भीरता, और पवित्रता देख कर डोना ने अपने को, उसके हाथों में अर्पण कर दिया। दोनों में ख़ूब मित्रता हो गई। जब कभी अवकाश मिलता टेरिसा आकर डोना के पास ही टिकती थी।

डोना ने बहुत कुछ उन्नति कर ली थी। टेरिसा के कहने पर डोना मठ में मुमुक्षा बनाई गई। मठ में लौटने का समय समीप आ पहुंचा। एक बार फिर टेरिसा को ईश्वर की सेवा करने का अवसर मिला।

सब लोग हृदय से टेरिसा की उन्नति चाहते थे। सब को यह पूर्ण रूप से विश्वास हो गया था कि टेरिसा ईश्वर की प्रेम भाजना बन गई है। दिन पर दिन टेरिसा गम्भीर, और शान्त बनती जाती थी। उसके मुंह में अपूर्व तेज झलकता था और उसकी वाणी अत्यन्त मधुर हो गई थी।

उसके गुरू लोगों का सन्देह भी जाता रहा। आज तक वे लोग समझते थे कि यह शैतान का काम है। अब सब ने मिलकर निश्चय किया कि यह शैतान का नहीं पर ईश्वर का काम है। ईश्वर ने टेरिसा के कानों में कहा 'घबड़ा नहीं, मैं

तेरे साथ हूं । मैं तेरा साथ नहीं छोड़ूंगा । तू भय मत कर । उसने प्रसन्न हो उत्तर दिया 'हे परमेश्वर तू मेरा परम मित्र है ।'

उसका गुरू फिर उसको कड़े से कड़े नियमों का पालन करने को कहने लगा । आत्मिक उन्नति में जो पुस्तकें टेरिसा को पढ़नी उचित थीं—उसने उनका पढ़वाना बन्द कर दिया । इस से टेरिसा के हृदय में भारी चोट लगी । ईश्वर ने फिर उसके कान में कहा, ' मेरी प्यारी बेटी, तू दुःख मत कर, मैं शीघ्र ही तुझे एक जीवित पुस्तक पढ़ने को दूंगा ।

एक दिन प्रार्थना करने में टेरिसा इतनी रत थी कि वह अपने को भूल गई । इतने में उसे प्रभु यीशु पास बैठा हुआ दिखलाई दिया । उसके मुंह में एक दिव्य ज्योति दिखलाई देने लगी । अन्य सन्यासिनियें ने वह ज्योति देखकर आश्चर्य में आ गईं और उसके विषय में वादविवाद करने लगी ।

पुरोहित आलमारेज के जाने के बाद एक अन्य पुरोहित टेरिसा का धर्म गुरू बना । उसने भी टेरिसा के नियमों को बहुत कड़ा बनाया । कड़े से कड़ा नियम का पालन करना टेरिसा अपना कर्तव्य समझती थी । एक दिन फिर प्रभु ने उसे दर्शन देकर कहा 'तू अत्यन्त कर्त्तव्यनिष्ठ' है । मैं तुझ को देख कर प्रसन्न हूं शीघ्र ही तुझे सत्य का ज्ञान प्राप्त हो जाएगा ।

---

(६)

मुमुक्षा।

टेरिसा की बाहरी जीवन अन्य सन्यासिनियों की तरह ही था। सब लोग एक साथ प्रार्थना करते और अन्य सार्वजनिक काम करते थे। समस्त मठ में वह अन्यों की अपेक्षा अधिक काम करती और दूसरों का उपकार करने में अधिक ध्यान देती थी। जब कभी वह अपना दिन का काम धन्धा समाप्त कर एकान्त में प्रार्थना करती तब उसके हृदय में एक अपूर्व शान्ति का अनुभव होता और ईश्वर सा आत्मा उसके हृदय में आकर उसे उपदेश देता था।

एक दिन जब टेरिसा प्रार्थना करने बैठी थी। तो एका-एक उसने देवदूत को अपने पास आते हुए देखा। उसका मुंह सूरज के समान तेज था और उसके हाथ में एक लम्बा तीर था जिसका मुंह आग की तरह लाल था, उसने बार बार उस तीर को टेरिसा के हृदय में बेधा। टेरिसा के हृदय में अपूर्व प्रेम का सञ्चार हुआ और वह परमेश्वर में लवलीन हो गई। देवालय में बैठी हुई अन्य बहिनें यह चमत्कार देखकर आश्चर्य करती थीं। टेरिसा के मुंह में अपूर्व तेज़ था और अद्भुत प्रकार की रोशनी उसके आमने सामने उड़ती दिखलाई देती थी।

टेरिसा अपना नाम नहीं चाहती थी। वह सब बातों को गुप्त रखा करती थी। वह परमेश्वर से बार बार बिनती करने लगी कि ऐसा उपाय कर जिससे लोग न जानने पावें। टेरिसा अब अधिक समय एकान्त में अपने कमरे में ही व्यतीत करती थी धर्मगुरू की आज्ञा हो गई थी कि टेरिसा जो चाहे करे।

टेरिसा ने अपने आप को पूर्ण रूप से प्रभु यीशु के चरणों में अर्पण कर दिया।

परीक्षा का समय निकट हुआ। सुवर्ण को जिस प्रकार स्वच्छ करने के लिये भयंकर अग्नि में डालना पड़ता है उसी प्रकार टेरिसा की आत्मा को परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये कठिन परीक्षा का सामना करना पड़ा।

एकाएक टेरिसा के हृदय में अशान्ति हुई। उसका धैर्य टूट गया। उसको सब बातें स्वप्न की तरह मालूम पड़ने लगीं। उसके चित्त में भारी संशय उत्पन्न हुए। उसके दिल में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं भयंकर पापी हूं और सब लोगों को अपनी कल्पना के द्वारा धोखा दे रही हूं। फिर भी टेरिसा ने ईश्वर का साथ नहीं छोड़ा। वह उसके पास चिपटी पड़ी रही और उसके नाम का जय जयकार करने लगी।

शैतान आकर फिर टेरिसा को सताने लगा। वीर टेरिसा ने अपने हाथ में क्रूश लेकर शैतान से युद्ध किया। 'प्रभु यीशु मेरे साथ हैं—मुझे अब किस बात का डर होना चाहिये?'—हर घड़ी यह यही कहा करती थी।

सब लोगों का ध्यान टेरिसा के ऊपर था। शैतान की बातें प्रायः सभी बहिनों के कानों में पड़ गईं। सब लोग उसके पास जा कर उससे पूछने लगे। टेरिसा उनसे कहती 'मैं निर्धन थी, ईश्वर ने मुझे धनी बनाया। मुझे ईश्वर ने बिलकुल बदल दिया। यह ईश्वर की दया का फल है कि मुझे शैतान से युद्ध करने की शक्ति प्राप्त हो गई। मैं निर्बल थी उसने मुझे बल देकर कृतार्थ किया है।

उस समय स्पेन देश में अनेक साधु सन्त रहते थे। पीटर नाम का एक साधु अपनी पवित्रता, भक्ति और अपनी विद्वत्ता

के लिये अत्यन्त प्रख्यात था। वह मनुष्यों के हृदयों की बातों को देखते ही जान लेता था। जब वह एमिला के कालेज में आने को हुआ तो डोना ने टेरिसा को उससे मिलने के लिये बुला भेजा।

साधु पीटर, टेरिसा को देखते ही उसकी कठिनाइयों को समझ गया। टेरिसा के सब दुःख दूर हो गये और उसको साधु से मिलकर अपार शान्ति प्राप्त हुई। साधु पीटर ने उससे कहा—ईश्वर की तेरे ऊपर अपार कृपा है तू भय मत कर। टेरिसा के धर्मगुरुओं से मिलकर उसने परामर्श किया और उससे समय समय पर पत्र लिखने को कहा।

टेरिसा सब प्रकार की सान्त्वना या भयंकर युद्ध करने के लिये कटिबद्ध हो गई। टेरिसा की कथा सुन कर सब सन्यासिनियों ने यह समझ लिया कि टेरिसा उनसे कई गुने आगे बढ़ गई है।

टेरिसा ने एक भयानक स्वप्न देखा। ईश्वर ने उसको नरक का चित्र दिखलाते हुए कहा कि यदि तू मेरी इच्छानुसार न चलती तो तुझे इसी नरक में घोर कठिनाइयां भोगनी पड़तीं। टेरिसा इस नरक के विषय में एक स्थान में लिखती है 'इस भयंकर दृश्य का वर्णन मुझ से नहीं हो सकता। जब कभी मुझे उस भयंकर दृश्य की याद आती है मेरा रक्त भय से जमने लग जाता है। वहां असाध्य वेदना है—उस वेदना का कुछ अन्त नहीं।

आंख खुलने पर टेरिसा चिल्लाकर कहने लगी हे प्रभो मैं उन लोगों के लिये क्या उपाय करूं जो नरक की घोर यातना सहने के लिये हैं। किस प्रकार उनको नरक की घोर यातना से बचाया जाय।

टेरिसा के मन में एक नवीन विचार आया। उसने एकान्त बास लेकर रात दिन पापी, व्यभिचारी, अधर्मी लोगों के लिये प्रार्थना करने का निश्चय किया।

अभी मठ में एक बड़ा उत्सव समाप्त हुआ था। लोग अपने घरों को जाने लगे। टेरिसा को भेटने के लिये लोगों की भारी भीड़ लग गई। धर्म सम्बन्धी बातों में टेरिसा से प्रश्नों की बौछार होने लगी। सब ने एक मत हो यह निश्चय किया कि एकान्त स्थान में जाकर एक मठ बनाना चाहिये। टेरिसा ने प्रश्न किया मठ के लिये धन की आवश्यकता है, धन कौन देगा ?' टेरिसा की बहिन ने उत्तर में कहा 'क्या धन की कुछ कमी है ? मैं ऐसे शुभ कार्य्य के लिये अपनी सम्पत्ति का आधा भाग देने के लिये तत्पर हूं।'

टेरिसा सब का उत्साह देखकर मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न हुई।

दूसरे दिन जब डोना नाम की एक बहिन टेरिसा से मिलने आई टेरिसा ने उससे सब बातें कहीं। डोना ने उत्तर में कहा हमें इस विषय में प्रार्थना करनी उचित है। अवश्य हमको नये आश्रम बनाने में सफलता प्राप्त होगी।

टेरिसा कोई नया विषय अपने आप आरम्भ नहीं करती थी उसको आरम्भ करने के पूर्व वह ईश्वर की इच्छा जानने के अभिप्राय से प्रार्थना करती थी। एक दिन प्रार्थना करते समय प्रभु ने आकर उसे दर्शन दिया और कार्य को करने का आदेश दिया।

टेरिसा ने अपने धर्मगुरू को सारा रहस्य कह सुनाया। वे इस नये आश्रम के विषय में सुनकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

उसके आदेशानुसार टेरिसा ने अन्य साधुओं को भी अपने आश्रम का रहस्य बतलाया। सब ने एक स्वर से टेरिसा को उसके निर्माण करने की अनुमति दी।

केवल मकान ढूंढ़ने का विलम्ब था। किन्तु इस वर्त्तमान मठ के अन्य सदस्य टेरिसा से मतभेद करने लगे। वे वर्त्तमान मठ के नियमों से सन्तुष्ट थे। किन्तु टेरिसा इन नियमों को आत्मीय उन्नति के पथ में बाधक समझती थी। सब लोग टेरिसा को और डोना को निरुत्साह करने लगे। कोई उसको पागल कहता तो कोई भ्रमी। स्थान स्थान में उसी की चर्चा होती थी। सन्यासी, और सन्यासिनियें सब इस के विरुद्ध थी।

टेरिसा और डोना एक तरफ़ और सारा धर्म समुदाय दूसरी तरफ़ था। सारे नगर में यह समाचार विजली की तरह फैल गया। परन्तु टेरिसा बिलकुल विचलित नहीं हुई। वह मन ही मन कहने लगी।

तू घबड़ा नहीं, तेरी सब चिन्तायें दूर हो जावेंगी जिसके हृदय में ईश्वर रहता है उसके लिये कठिन काम भी सरल हो जाता है। ईश्वर ही सब कुछ है।

पुरोहित पीड्रो ने टेरिसा की सहायता करने का वचन दिया। वह बड़ा विद्वान और चतुर था। अपनी पवित्रता और भक्ति के लिये सर्वत्र में प्रख्यात था। लोगों ने उसको भी विचलित करना चाहा। किन्तु उसने प्रभु से प्रार्थना करके यह जान लिया कि अवश्य सहायता करनी उचित है।

दैवी काम।

अभोला के जब विद्वान पुरुष ने टेरिसा को सहायता देने का वचन दिया—तब अनेक और भी आ आ कर उसका हाथ बटाने लगे। बड़े बड़े पुरोहितों ने जब सहायता का वचन दिया तो वे लोग जो कट्टर शत्रु हो गये थे आज आकर सब से आगे आश्रम बनाने को अग्रसर हुए। नगर के किनारे एक छोटा सा मकान बिक्री के लिये तैयार था सब ने परामर्श कर उसको ख़रीदने का निश्चय किया।

मठ के अधिकारियों के बीच और बहिनों में इस विषय में बड़ा वादानुवाद हो रहा था। वे टेरिसा की इच्छानुसार चलना नहीं चाहते थे। मठ के अधिकारी के पास प्रार्थना पत्र भेजा गया। उसने सब सोच समझ कर टेरिसा से कहा कि अन्य मठ का बनना कठिन जान पड़ता है। उसने अपनी सम्मति नहीं दी। टेरिसा ने अन्य पुरोहितों से पूछा सबने अधिकारी की हां में हां भरी।

टेरीसा की सब आशा निराशा में परिणत हुई किन्तु उसका विश्वास कुछ कम नहीं हुआ। ईश्वर की इच्छा थी कि नये मठ की स्थापना हो वह उसके लिये बार बार प्रार्थना करने लगी। रात दिन वह अपने चित्त में उसी की कल्पना करती और प्रार्थना करती थी। किन्तु अपनी कल्पनाओं को उनसे कहती नहीं थी। जब कभी पुरोहित इबानेज उससे मिलने जाता वह उससे अपनी आध्यात्म की बातें करती मठ की कुछ नहीं। क्योंकि उसको संघ का नियम पालन करना था। यह भी एक

कठिन परीक्षा थी। पुरोहित इबानेज टेरिसा को इस विनीत स्वभाव को देख बड़े प्रसन्न हुए।

मठ में रहने के कारण टेरिसा को नियमों का पालन करना पड़ा, किन्तु उसके साथी जो मठ के बाहर थे वे नियमों का पालन करने को वाधित नहीं किये जाते थे। पुरोहित इबानेज के कहने से डोना ने रोम के पुरोहित वर्गों से नये मठ को खोलने की आज्ञा मांगी। अन्य पुरोहित लोग निरन्तर अपने अपने काम में लगे थे।

थोड़े महीने के बाद पुरोहित इबानेज एकान्त वास के लिये संघ से चले गये। संघ को उनके छोड़ने से भारी हानि उठानी पड़ी। लेकिन यह हानि थोड़े ही काल के लिये थी। पुरोहित गासपर जो अपनी बुद्धिमत्ता, पवित्रता और भक्ति के लिये प्रख्यात था उसके स्थान पर नियुक्त हुआ।

टेरिसा को स्वप्नावस्था में प्रभु ने आकर आज्ञा दी कि नये मठ के विषय में पुरोहित गासपर से परामर्श ले। टेरिसा ने ऐसा ही किया। पुरोहित ने टेरिसा की बातें सुन कर ईश्वर से प्रार्थना की। उस पर बहुत अच्छी तरह परमेश्वर की इच्छा प्रगट हो गई। गासपर ने टेरिसा को पुनः मठ के काम को हाथ में लेने की आज्ञा दी।

उन दोनों ने चुपचाप बिना अधिकारी को सूचना दिये काम करना आरम्भ किया। सब काम सुचारु रूप से सम्पादित होने लगा।

मठ में बहिनें टेरिसा को दुःख देती थीं। जितना द्रव्य आना चाहिये था उतना नहीं आता था। टेरिसा शान्त हो परमेश्वर से कहती थी। हे पिता, तू क्यों मुझे असम्भव कार्यों

को करने की आज्ञा देता है। मैं क्या कर, सकती हूं मेरे पास न द्रव्य है और न बुद्धि।

परमेश्वर के काम को सम्पादित करने के लिये द्रव्य और बुद्धि की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी पवित्र जीवन प्राप्त करने की है। प्रभु यीशु के चरणों में अपने को अर्पण कर टेरिसा के मस्तक से भारी बोझ उतर गया। और सब कठि- नाइयां दूर हो गई।

उसने अपनी बहिन को पत्र लिख कर पूछा कि क्या उसका पति 'डोन जुऔन' आमिला में आकर मकान ख़रीद सकता है? उसके पति ने तुरन्त आकर मकान खरीद लिया। दोनों पति पत्नी आकर वहां रहने लगे। यह अवसर टेरिसा को अच्छा मिला, वह कभी कभी वहां आकर उनसे परामर्श लेती थी।

टेरिसा का बहनोई धनी नहीं था वह कुछ अधिक सहायता टेरिसा को नहीं दे सका। टेरिसा फिर भी विचलित नहीं हुई। वह बड़े विश्वास से प्रार्थना करती रही। थोड़े ही काल के बाद काम आरम्भ कर दिया गया और टेरिसा के आश्चर्य का कुछ ठिकाना नहीं रहा जब उसके भाई ने प्रचुर धन उसके मठ के लिये उसके पास भेज दिया।

घर बहुत छोटा था। कहां पर देवस्थल होगा। कहां पर लोग आराम करेंगे। यह चिन्ता उसको होने लगी। वह इसी चिन्ता में व्यग्र थी कि प्रभु ने उससे कहा 'घबरा नहीं। क्या तुझे मालूम नहीं मुझे सिर छिपाने तक को स्थान नहीं मिला। तुझे तो रहने के लिये यह एक छोटा मकान मिल गया है।

प्रभु को प्रणाम कर टेरिसा फिर काम में लग गई। सब काम सरल हो गये। एक दिन की बात है कि टेरिसा के बहिन का लड़का जो केवल पांच वर्ष का था बाहर खेलता था।

अचानक दीवार के पत्थर टूटने से उसे बड़ी चोट आई और वह बेहोश हो गया। उसका पिता बालक को उठा कर टेरिसा के पास लाया। घर में रोना मच गया। टेरिसा ने सब को शान्ति दी और प्रार्थना की। थोड़ी देर बाद बालक मुसकुराया। बालक के माता पिता टेरिसा को धन्यवाद देने लगे।

इसके बाद दूसरी घटना घटी। एक दूसरी दीवार जो अभी बन कर तैयार हुई थी गिर पड़ी। टेरिसा ने जब यह सुना तो लोगों से कहा—इसको फिर बनाना होगा डोना ने उत्तर दिया हमारे पास धन नहीं है।

टेरिसा ने कहा—चिन्ता मत करो धन आवेगा। उसी दिन फिर प्रचुर धन मठ के लिये हाथ आया। मठ बन कर तैयार होने को आया। आज टेरिसा का स्वप्न पूरा होने को हुआ।

टेरिसा के चुपचाप काम करने पर भी लोगों के मन में भांति भांति की आशंकायें उत्पन्न होने लगी। टेरिसा अधिकारी के कानों में इस बात को नहीं पहुंचने देती थी। टेरिसा की पवित्रता और धार्मिकता की कथा दूर दूर देशों में फैल गई। सब पुरोहित वर्गों में उसकी आध्यात्मिक उन्नति की चर्चा होने लगी। सब लोग टेरिसा की प्रशंसा करते और उसकी प्रार्थनाओं पर विश्वास करते थे।

टोलीडो नगर में एक प्रख्यात स्त्री के पति की मृत्यु हुई। पति के मर जाने से पत्नी को भारी धक्का लगा। वह पागल की नाई हो गई। उसे कोई शान्ति देने वाला नहीं था, कोई सान्त्वना पहुंचाने वाला नहीं था। लोगों के कहने से उसने टेरिसा को कुछ दिन अपने पास ठहरने को बुलाया।

अधिकारी की आज्ञा पाकर टेरिसा उस धनी विधवा को शान्ति देने को गई। प्रभु यीशु ने उससे कहा—हे बेटी तू किसी

की चिन्ता न कर और न किसी की सुन। तू जा उस दुःखित हृदया को शान्ति दे। मैं तेरे साथ रहूंगा।

नये मठ का भार अपने भाई वहिन और वहनोई के हाथ देकर वह अपने साथ एक सन्यासिनी को लेकर बिदा हुई।

टेरिसा ने विधवा को बहुत निर्बल पाया। दुःख की वेदना में वह व्याकुल थी। न भोजन करती थी और न किसी से बोलती चालती ही थी। उसके सब कारवारियों को कुछ सूझता नहीं था कि क्या करें। टेरिसा ने आते ही अपना काम आरम्भ कर दिया। वह नित्य विधवा के साथ प्रभु से प्रार्थना करती। धर्म सम्बन्धी कथायें कह कर विधवा के हृदय को शान्ति पहुंचाती। अल्पकाल में ही टेरिसा ने प्रार्थना के बल से और अपने प्रेम से विधवा के हृदय में अपना आधिपत्य जमा ही दिया। विधवा ने अपना भविष्य ईश्वर की सेवा में अर्पण करने का निश्चय कर लिया। उसने टेरिसा को कुछ महीने और अपने साथ रहने के लिये प्रार्थना की। वह टेरिसा को अपना धर्म गुरू मानने लग गई और उसकी सेवा उस धनी विधवा के घर में एक महारानी की नाईं होने लगी। सब लोग टेरिसा का मान करते थे और उसकी इच्छायें सब पूर्ण रूप से पालन की जाती थीं।

प्रत्येक जन टेरिसा से, व्यवस्था लेने आते थे विधवा के मित्र और सम्बन्धी तो टेरिसा से इतने प्रसन्न थे कि वे सर्वदा उसी के साथ रहना चाहते थे। जो लोग टेरिसा से मिलने आते थे उनमें से एक कुमारी मेरिया टेरिसा की विशेष कृपा भाजन बन गई। उसका रूप अद्वितीय था। और कई दिनों से उसकी इच्छा ईश्वर की सेवा में अपने जीवन को अर्पण करने की थी। टेरिसा ने उसकी आंखों से उसकी इच्छा जान ली।

टेरिसा ने एक दिन उसके गहनों में हाथ लगा कर उससे कहा, 'मेरिया क्या यह गहने उन हाथों को शोभा देंगे जो हाथ प्रभु के चरणों का स्पर्श करने की प्रतीक्षा में हैं।' मेरिया को यह सुनकर आश्चर्य हो गया। उसने कभी किसी से अपने हृदय की बात नहीं कही थी। टेरिसा ने अपनी इच्छा भर मेरिया को सत् उपदेश किया। और उसको परमेश्वर के पास पहुंचने का रास्ता बतला दिया।

थोड़े ही काल के बाद टेरिसा का एक और सन्यासिनी से परिचय हो गया। उसका विचार भी टेरिसा की तरह एक मठ निर्माण करने का था। किन्तु उसको टेरिसा की तरह साहस नहीं था। अन्त में टेरिसा ने उसको भी अपने मठ में ले लेने का संकल्प कर लिया।

अब जो लोग मठ में टेरिसा के विरुद्ध थे वे भी ईश्वर की कृपा से अपनी अपनी भूल स्वीकार कर टेरिसा के साथ हो लिये। प्रचुर कार्य होने पर भी टेरिसा ने अपना नियम नहीं छोड़ा। वह रात दिन प्रार्थना में रत रहती और प्रभु की क्रान्ति उसके मुंह से चमकती थी।

एक दिन एक घर के दास को सिर और कान की पीड़ा ने भयङ्कर वेदना दे रक्खी थी। उसने टेरिसा से अपने सिर पर क्रूश का चिन्ह बनाने की विन्ती की। टेरिसा ने उससे कहा कि तू स्वयं अपने हाथ से यह काम कर सकता है। इतना कहकर टेरिसा ने उसको छूआ। और वह अच्छा हो गया।

धनी विधवा टेरिसा को बहुत चाहती थी। उसका रहना वहाँ अनिश्चित काल के लिये होगा यह मालूम पड़ने लगा। अधिकारी भी टेरिसा को बुलवाने का कुछ प्रबन्ध नहीं करते थे।

अचानक टेरिसा का बहनोई बीमार पड़ गया उसकी बड़ी इच्छा हुई कि टेरिसा उसके साथ रहे। किन्तु अधिकारी ने उसे बुला भेजा। टेरिसा को आज्ञा पालन करनी पड़ी। उसने मठ में पहुंच कर फिर लौटने का वक्त दिया।

रोम से आज्ञा आ गई। विशप को अधिकार दिया गया कि संघ की स्थापना की जाय टेरिसा ने यह मौका अच्छा पाकर सबसे इस विषय में परामर्श लिया। बड़े बड़े धर्मध्यक्ष उस समय वहाँ उपस्थित थे। एक सभा बुलाई गई। सब ने सर्व सम्मति से यह निश्चय किया कि संघ का काम शीघ्र उपस्थित किया जाय विशप से आज्ञा मांगी गई। उसने आज्ञा देने से आपत्ति की। जब यह समाचार सन्त पीटर के कानों में गया तब उसे मूर्छा आ गई। वह बहुत बीमार हो गया। उस कठिन दुःसाध्य रोग की अवस्था में ही उसने विशप के पास जाने का निश्चय किया। इतने सम्मानीय साधु को इस अवस्था में अपने पास आते देख विशप ने मठ निर्माण करने की आज्ञा दे दी।

जिस दिन मठ का सब काम समाप्त हो गया उसी दिन टेरिसा का बहनोई भी अच्छा हो गया। उस मकान को छोड़ ये शहर में एक मकान भाड़े में ले रहने लगा। अब टेरिसा के लिये काफी स्थान हो गया था। पांच छः लोगों को लेकर उसने संघ का काम आरम्भ कर दिया।

डा० डाजा ने आराधना करनी आरम्भ की। बड़े समारोह से सब लोग प्रभु भोज में सम्मिलित हुए। मठ के सदस्यों को नये वस्त्र पहनाये गये। देवस्थल में प्रभु के चरणों में मस्तक नवा कर सब ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अपना हृदय अर्पण किया। नये मठ में पुराने मठ के सब कट्टर नियम पालन

होने लगे। सब ने अपना नाम बदल लिया। जूते पहनना छोड़ दिया। सीधा साधा भोजन करना आरम्भ कर दिया।

टेरिसा को अभी अपने मठ को छोड़ इस नये मठ में प्रवेश करने की आज्ञा प्राप्त नहीं हुई थी।

चुने हुए लोग वहाँ रक्खे गये। संघ को एक अद्भुत पवित्र स्थान बनाने का निश्चय किया। अचानक फिर शैतान ने आकर टेरिसा को कष्ट देना आरम्भ कर दिया। उसे भय होने लगा कि कहाँ से मठ के लिये प्रचुर धन आवेगा? कौन इस कठिन बोझ को अपने कन्धे में संभाल सकेगा? क्यों नहीं अधिकारी को आज्ञा इस मठ की संस्थापना करने को ली गई? क्या मेरे बिना संघ में अन्य बहिनें रह सकेंगी इस प्रकार अनेक प्रश्न बार बार आकर उसको कष्ट देने लगे। इतने में दिव्य ज्योति आई। उसके हृदय में अद्भुत प्रकाश का उदय हुआ। उसकी सब शंकाओं का समाधान हो गया। अधिकारी से आज्ञा लेकर साधु यूसफ के मठ में रहने का ही उसने निश्चय किया।

नया मठ।

नये मठ को 'साधु युसफ' का मठ कहने लगे। इसके स्थापित होने का समाचार जंगल की आग की तरह चारों ओर फैल गया। ग़रीब, लोगों ने इसका स्वागत और धनी मानी लोगों ने इसके विरुद्ध जाल रचना आरम्भ किया। धनी मानी लोग कहते थे कि इस मठ की कोई अपनी निज की आय नहीं है। यह निर्धन लोगों के मुंह की रोटियां छीनेगा, इससे अधिक और भयानक बात और क्या हो सकती है।

जब नये मठ सम्बन्धी बात टेरिसा की अन्य बहिनों ने सुनी तो वे टेरिसा को उलहना देने लगीं। पुराने मठ के अन्दर सब लोग टेरिसा के विरुद्ध हो गये। टेरिसा के आने पर अध्यक्षा ने उसे बुला भेजा और उससे अनेक प्रकार के प्रश्न पूछने लगीं। अध्यक्ष ने भी सब के सामने टेरिसा को धमकाया। टेरिसा ने सब मान अपमान चुपचाप सहा—एक शब्द भी उसके मुंह से नहीं निकला। उसने अध्यक्ष से कहा कि मुझे दण्ड और क्षमा दी जावे।

टेरिसा का उत्तर सुन कर अध्यक्ष का हृदय पिघल गया। किन्तु अन्य बहिनों ने उसकी कुछ भी न सुनी। सबने कहा कि टेरिसा ने एक नया मठ स्थापित करके भारी बदनामी अपने सिर पर ली है और अपने साथ पुराने संघ को भी बदनाम किया है। टेरिसा ने यह चुपचाप सहन किया।

अध्यक्ष ने टेरिसा से कहा कि क्योंकर उसने इस नये मठ की स्थापना की। टेरिसा का शान्त और गम्भीर भाव देख कर अध्यक्ष का हृदय पानी पानी हो गया उसने सब सन्यासिनियों को कमरे से अलग जाने की आज्ञा दी और टेरिसा से एकान्त में बातें करने लगा।

अध्यक्ष ने बड़े शान्त भाव से सारी कहानी सुनी। उसका क्रोध जाता रहा। वह टेरिसा के पक्ष में हो गया। और उसने टेरिसा को नये मठ में जाने की आज्ञा देने का वचन दिया।

टाऊन हाल में विपक्षी लोगों की एक सभा हुई। नये मठ को बन्द करने और उसके सदस्यों को घर वापस भेजने के विषय में प्रस्ताव पास हुए। नये मठ के भाई बहिनों ने ईश्वर से प्रार्थना की। नगर के लोगों की आज्ञा का पालन करना

उन्होंने उचित नहीं समझा। क्योंकि एक विशप के सिवा उनको और किसी की आज्ञा माननीय नहीं थी।

गवर्नर ने एक दूसरी सभा बुलाकर कहा कि नया मठ बिना उसकी आज्ञा के बनाया गया है इसलिये गैरक़ानूनी है। मठ को तोड़ देना चाहिये। आज्ञा देने की तैयारी होने ही को थी कि एक वृद्ध विद्वान पुरोहित उठ कर कहने लगा। टेरिसा को मैंने पहले कभी नहीं देखा था, केवल उसके नाम से परिचित था। इसलिये मैं टेरिसा का पक्ष न ले निस्वार्थ भाव से अपनी सम्मत्ति देता हूं। उसने बड़ी गम्भीरता से अपना उपदेश आरम्भ किया—इस सभा को बुलाने का आपका उद्देश्य क्या है। क्या कोई शत्रु आकर आपके नगर पर आक्रमण करना चाहता है। या शहर में भयानक अग्नि लग रही है। क्या प्लेग या दुर्भिक्ष हम लोगों को सता रहा है? नहीं, इनमें से एक भी बात हम लोगों को दुःख नहीं दे रही है। केवल चार स्त्री पुरुष शहर के एक कोने में एक मठ बना कर हम सब की शुभ कामना के लिये प्रार्थना कर रहे हैं। क्या इसी के कारण आप को इतना कष्ट उठाना पड़ा कि आप यहां पर एकत्र हुए। क्या उनकी प्रार्थनायें आपके हृदय में भाले की तरह चुभती है। विशप के सिवा इस धार्मिक बात में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यदि आप इसको नियम विरुद्ध समझते हैं तो बिशप से इसके विषय में कहें।

पुरोहित के उपदेश का सबने आदर किया। कुछ दिनों के लिये सब कष्ट दूर हो गये। गवर्नर ने सभा भंग कर दी। किन्तु लोग इसको अपना अपमान समझने लगे। वे अध्यक्ष और अध्यक्षा को टेरिसा के विरुद्ध भड़काने लगे।

इधर टेरिसा के साथियों ने उसको छोड़ा नहीं। पुरोहित

ज्यूलियन टेरिसा को सान्त्वना देता और उसकी अनुपस्थिति में नये मठ के सभासदों की रक्षा करता था। पुरोहित डाजा भी अपने जी जान से मठ के लोगों को आध्यात्म में सदुपदेश देता था। विधवा डोन ने मठ के आय व्यय का भार अपने हाथों में लिया।

राज सभा में नगर निवासियों ने टेरिसा के विरुद्ध पत्र भेजा। विपक्षियों को हार खानी पड़ी और गवर्नर को खूब धमकाहट मिली। खूब वादानुवाद होने के बाद टेरिसा को मठ में जाने की आज्ञा मिल गई।

टेरिसा की प्रसन्नता की सीमा नहीं थी। वह शीघ्र देवस्थल में जा प्रभु को धन्यवाद देने लगी। एकाएक प्रभु ने उसको दर्शन देकर उसके सिर पर अपने हाथों से ताज पहनाया। और उसको आशीर्वाद दिया। नये मठ में प्रवेश कर टेरिसा ने कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया।

टेरिसा की इच्छा पूर्ण हुई। नया मठ निर्माण हो गया। काम सुचारु रूप से सम्पन्न होने लगा। संसार के असंख्य पापी लोगों के लिये वे प्रार्थना करने लगे।

मठ में टेरिसा अपनी बहिनों को भांति भांति के उपदेश देती थी। सब काम नियम पूर्वक सम्पन्न होते थे। पारी पारी सब काम करते थे। एक पल व्यर्थ नहीं जाता था। मठ का सब काम बहिनें अपने हाथ से करती। अपने अवकाश के समय में बहिने बुनना काढ़ना सीखती थीं। टेरिसा मठ में कभी किसी को उदास होने नहीं देती थी। जो कोई उदास रहता उसके संग में लिये जाने की बहुत कम आशा की जाती थी।

टेरिसा को सब बातों का पता था। दुःख, सुख में वह सर्वदा शान्त व गम्भीर रहती थी। यही उत्तम उपदेश अपने

साथियों को भी देती थी। जब कोई रोगी हो जाता उसे वह प्रसन्न करने का शक्तिभर प्रयत्न करती थी।

'प्रार्थना करना छोड़ो मत। यह प्रार्थना करने का अद्भुत अवसर है। यह समय ऐसा है जब स्वयं ईश्वर हमारे पास ही रहता है यदि हमें परमेश्वर बुला भी ले तो हानि क्या। हम उसके देश में चले जावेंगे जिसके लिये सब सांसारिक त्याग कर चुके हैं।'

कभी कभी विशप महाशय मठ देखने को आता था। मठ को देखकर उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती थी। एक दिन विशप अपने साथ एक क्रूस लाया। टेरिसा को विज्ञप्ति करने पर उसने वह क्रूस मठ को भेंट कर दिया। टेरिसा ने उसको अन्य बहिनों को दिखलाने की आज्ञा मांगी। थोड़ी देर बाद जब विशप और टेरिसा बातों में मग्न थे तब लोगों का एक जलूस वही क्रूस हाथ में लिये उनके पास गाता हुआ आया। विशप यह देख कर बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ ही दिनों के बाद टेरिसा को भेंटने एक धर्मगुरू आया। वह अभी पश्चिमी टापुओं से लौट आया था। उसने टेरिसा को बड़े बड़े हृदय विदारक समाचार कह सुनाये; टेरिसा उसके चले जाने पर प्रभु के चरणों में पड़ कर प्रार्थना करने लगी। प्रभु ने दर्शन देकर कहा 'अभी धैर्य्य धर। तुझे मेरे नाम पर बड़े बड़े काम करने होंगे।'

एक बार एक जनरल मठ में प्रवेश करते ही बहुत प्रसन्न हुए। वे स्पेन देश में इसी प्रकार के मठ बनाने को जा रहे थे। उसने टेरिसा को इस नये मठ के निर्माण करने के लिये धन्यवाद दिया। और विशप को आज्ञा दी कि आगे से इस मठ के अनुसार अन्य मठ बनें।

वियोग ।

वियोग की घड़ी निकट आ पहुंची । वह समय समीप आ ही पहुंचा जब टेरिसा को अपना आश्रम छोड़ना पड़ा ।

उसको एक दूसरा आश्रम निर्माण करना था । लोगों का कहना है कि जो लोग रात दिन अपना समय प्रार्थना व ध्यान में व्यतीत करते हैं वे संसार में किसी काम के नहीं रहते । टेरिसा पर यह बात नहीं घटती । उसने प्रार्थना तथा प्रभु की भक्ति से एक अपूर्व शक्ति प्राप्त कर ली थी जिससे सब कामों में उसे सफलता प्राप्त होती थी ।

अमीला नगर से २० मील की दूरी पर उसने दूसरे आश्रम के लिये एक स्थान चुना था । वहां जितने धार्मिक लोग रहते थे सबने टेरिसा को सहायता देने का वचन दिया । टेरिसा के अन्य सलाहकारों ने भी उसको सहायता देने का वचन दिया । पुरोहित ज्यूलिया उस स्थान में भेजा गया जहां बहिनें ठहर सकें ।

अगस्त मास में टेरिसा अपने साथ चार पांच और बहिनों को लेकर वहाँ के लिये रवाना हुई । रात एक ग्राम में व्यतीत हुई । प्रातःकाल जब वे चलने की तैयारी करते थे तब उनको एक सम्वाद मिला कि, घर भाड़े में मिलना अत्यन्त कठिन है ।

सब लोग घबरा गये । टेरिसा ने सारा दिन प्रार्थना करने में काटा । परमात्मा ने उसकी प्रार्थना सुनी । एक दूसरा सम्वाद आया कि रहने को घर मिल गया है रात के बारह बजे के लगभग वे लोग मेदिना पहुंचे एक टूटा हुआ मकान था,

यही आश्रम के लिये ख़रीदा गया था। टेरिसा ने सोचा कि जिस पुरोहित ने उसे ख़रीदा उसकी आँखे अन्धी हो गई होंगी।

पुरोहित और उनके अनुचरों ने काम आरम्भ कर दिया। सारे घर को झाड़ पोछ कर स्वच्छ किया। सब चीज़ों को नियमित स्थानों में रक्खा। प्रातःकाल होते ही उपासना काल की घण्टी बजी। लोगों के आश्चय का कुछ ठिकाना नहीं रहा। रात रात ही में मठ की स्थापना हो गई। सब लोग प्रार्थना के लिये एकत्र हुए। टेरिसा का हृदय प्रेम से गद्गद हो गया उसने ईश्वर को बार बार धन्यवाद दिया।

घर अत्यन्त पुराना था। जीर्णोद्धार की अत्यन्त आवश्यकता थी। एक भयङ्कर तूफ़ान में इसके टूटने में कोई आश्चर्य नहीं था। इसकी ग़रीबी को देख कर ही लोगों की विशेष सहानुभूति हुई लोग अधिक संख्या में आ आ कर प्रार्थना करने लगे। रात को चोर डाकुओं का भय था इस कारण स्वयं टेरिसा ही घर में पहरा देती थी। एक सप्ताह बाद उस नगर के एक धनी व्यापारी ने अपने घर का ऊपरी भाग बहिनों के रहने को दिया—उस बीच में मकान का जीर्णोद्धार किया गया।

साधु एनो के मठ का अध्यक्ष एनटोनियो टेरिसा से अत्यन्त सहानुभूति रखता था। जब टेरिसा ने उससे अपना विचार एक ऐसे मठ को जिसमें केवल पुरुष ही रह सकें स्थापित करने का प्रगट किया तो एनटोनियो ने सब से प्रथम अपना नाम उस संघ के सभासदों में लिखाया। थोड़े ही दिनों के बाद एक वृद्ध पुरोहित भी इसी बात की चर्चा सुनकर टेरिसा को देखने आया उसने टेरिसा से एक नवयुवक के विषय में कहा जो अत्यन्त धार्मिक जीवन व्यतीत करने का अभिलाषी था। उस नवयुवक

का नाम योहन था, वह स्वयं दूसरे दिन टेरिसा से मिलने आया। उसकी नम्रता, बुद्धिमत्ता और सुन्दर कान्ति को देखकर किसी स्वर्गीय दूत के देखने का आभाष होता था। टेरिसा ने उसे एक वर्ष तक और पढ़ने के लिये कहा।

उसी बीच में डोन वरनिन्डो ने टेरिसा को अपनी सम्पत्ति का एक भाग दे दिया। अभी टेरिसा यह सम्पत्ति लेने ही को थी, कि उसकी पुरानी परिचिता डोना आकर टेरिसा को अपनी सम्पत्ति देने लगी। इधर महारानी ने टेरिसा को अपने अपने मठ का निरीक्षण करने बुलाया। महारानी फिलिया का मठ इस बीच उन्नति नहीं कर रहा था। टेरिसा की वहाँ अत्यन्त आवश्यकता थी।

इस विज्ञप्ति को टेरिसा ने स्वीकार किया और वहां को रवाना हुई। मठ की अध्यक्षा ने आदर सत्कार से टेरिसा का स्वागत किया। और उससे बार बार पूछने लगी कि इतने ही कम समय में किस प्रकार उसने इतनी उन्नति प्राप्त की है।

टेरिसा ने सब को सुन्दर उपदेश दिये। कठोर नियम सरल बनाये गये। संघ के लोगों के हृदयों में नये प्रकार का प्रेम और आनन्द उमड़ पड़ा। दो महीने के बाद हीं सब के अत्यन्त प्रसन्न हो गये और टेरिसा को हृदय से धन्यवाद देने लगे।

इसके बाद टेरिसा 'प्रेदीना' का सब प्रबन्ध ठीक कर अपने साथ चार सन्यासिनियों को ले 'टोलीडो' आई यहां भी उसने अपने पुरानी सहेलियों की सहायता से एक नये मठ की स्थापना की। दो महीने तक वहाँ रहकर वह 'मैलाडोलिड' स्थान को गई।

यह नया स्थान ६० मील के लगभग दूर था। रास्ते में चलने के कष्ट के कारण टेरिसा बीमार पड़ गई। उसे आराम लेने के लिये कुछ दिनों टॉलिडो में टिकना पड़ा। अभी अच्छी तरह स्वस्थ भी न होने पाई थी कि उसने फिर चलना आरम्भ कर दिया, इसके प्रतिफल स्वरूप फिर रोगी बन अपने मठ में वापस आ गई।

थोड़े दिनों के बाद स्पेन देश के एक महानुभाव जन टेरिसा से मिलने आया उसने टेरिसा को एक छोटा सा मकान पुरुषों के मठ बनाने को दिया। टेरिसा ने जाकर मकान का निरीक्षण किया। वह बहुत छोटा और बड़ा मैला था। शायद ही वहां कोई पुरुष कभी रहने के लिये सहमत होता। टेरिसा के उपदेश देने पर लोग वहां रहने के लिये राज़ी हो गये।

पुरोहित यूहन्ना ने अध्यक्ष की अनुमति संघ स्थापन करने की लेली। टेरिसा ने यूहन्ना को भांति भांति के उपदेशों से आध्यात्मिक बातों में चतुर बना दिया। कई मज़दूरों की सहायता से आवश्यकीय काम आरम्भ किया गया।

रहन सहन बहुत साधारण था। कमरे इतने छोटे थे कि बड़ी कठिनता से लोग उनमें लोट ले सकते थे। पुवाल बिछौने का काम और पत्थर तकिये का काम देते थे। यों मानो एक बीज बोया गया जो सड़ गल कर नये पौधे में परिवर्त्तित होकर फूलेगा और फलेगा।

पुराने मठ की अध्यक्षा।

एक एक कर के भिन्न भिन्न स्थानों में पांच संघ स्थापित किये। पासटराना नगर में एक और संघ मनुष्यों के लिये निर्माण किया गया। किन्तु उस ज़िले का अध्यक्ष टेरिसा का विपक्षी था। उसने सब संघों को बन्द करने और टेरिसा को पुराने संघ में वापस जाने की आज्ञा दी।

टेरिसा ने एक बड़ा नम्र पत्र अध्यक्ष को लिखा। पत्र पढ़-कर अध्यक्ष को अपनी भारी भूल का पता चल गया। किन्तु पुरानी दीक्षा लेने के कारण टेरिसा को पुराने मठ में वापस जाना पड़ा। इसी समय रोम देश से पोप ने दो विद्वान परिडतों को स्पेन के संघों का सुधार करने भेजा। परिडत लोग सब से प्रथम पुरुषों के मठ में पहुंचे। सन्त लोगों का पवित्र सरल जीवन देखकर वे लोग बड़े प्रसन्न हुए। वहां से सन्यासिनियों के मठ में जब परिडत लोग पहुंचे तो उनकी प्रसन्नता की कुछ सीमा न रही। ये संघ के काम को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हो गये। और उन्होंने टेरिसा को देखने की इच्छा प्रकट की। टेरिसा उस समय 'अभीला' में रहती थीं। वे सब टेरिसा से मिलने गये। पुराने मठ की अध्यक्षा अपने काम से बहुत घृणा करती थी। पुरोहित लोगों ने जब यह हाल देखा तो एक सभा बुलाकर टेरिसा को अध्यक्षा के पद पर नियुक्त किया।

टेरिसा को पूरे दो महीने सब चीज़ें ठीक करने में लगे। उसको अधिकार मिलते ही सर्वत्र शान्ति छा गई और फिर परस्पर प्रेम हो गया। थोड़े ही दिनों के बाद नये मठ की अध्यक्षा का पद भी टेरिसा को ही मिल गया।

टेरिसा ने अध्यक्षा बनते ही मठ के नियमों में अपनी इच्छा के अनुसार परिवर्त्तन करना चाहा। किन्तु मठ के लोग तो उसके विरुद्ध ही थे उसको अध्यक्षा मानने को तैयार नहीं हुए।

टेरिसा के लिये यह भारी बोझ आ खड़ा हुआ। वह चुप-चाप प्रभु के चरणों में प्रार्थना करने लगी। सारी रात प्रार्थना में व्यतीत हुई। प्रभु ने उससे कहा भय न कर मेरी शक्ति में विश्वास रखते हुए सब काम कर। परिणाम सब अच्छा होगा।'

अक्टूबर मास में टेरिसा अध्यक्ष के साथ पुराने मठ का भार लेने गई। टेरिसा मञ्च पर अध्यक्षों के साथ बैठाई गई। जैसे ही अध्यक्ष ने लोगों से टेरिसा को अध्यक्षा के पद पर आरूढ़ किये जाने का प्रस्ताव किया सर्वत्र भारी हुल्लड़ मच गया। सब के मुंह से घृणा के भाव दिखाई देने लगे। अध्यक्ष ने सब को संघ छोड़ने की धमकी दी पर किसी ने कुछ सुना नहीं। टेरिसा बड़ी कठिनता से भीड़ को चीरती फाड़ती देवस्थल में जाकर प्रार्थना करने लगी। थोड़ी देर बाद वहां से लौट कर आने पर सब से उसने नम्रता से अपना परिचय दिया।

टेरिसा ने सब को सम्बोधन कर कहा—आप मेरे नियमों से इतना भय क्यों करते हैं। मैं आपके संघ के नियमों से परि-चित हूं मुझे मालूम है आप इसी से सन्तुष्ट हैं। तब मुझे इसमें परिवर्त्तन करने की क्या आवश्यकता है। हमारा प्रभु बड़ा प्रेमी है वह हमारी निर्बलताओं के कारण हम पर दया करेगा।'

सब बहिनें उसकी यह बातें सुन कर बड़ी प्रसन्न हो गई। टेरिसा ने अपनी बुद्धि भर उन लोगों को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया।

सब काम नियम पूर्वक होने लगे। सब के साथ प्रेम करते हुए टेरिसा ने सब के हृदय में अधिकार कर लिया। सब बड़ी प्रसन्नता से एक बार फिर प्रभु को भक्ति करने में अग्रसर हुए।

---

(११)

अन्तिम परीक्षा।

जब टेरिसा को मठ में काम करते करते दो वर्ष हो गये तब एक दिन अध्यक्ष ने उसे अन्य मठों का निरीक्षण करने को जाने की आज्ञा दी। पासट्रेना के मठ की अधिष्ठाता का पति का अभी स्वर्गवास हुआ था उसकी विधवा इवोली का विचार अब मठ में भर्ती होने का था। टेरिसा उसके व्यवहारों से परिचित थी। विधवा ने स्वयं अपने को मुमुक्षा बना कर अध्यक्ष से कहा कि मेरी दो दासियों को भी मेरे साथ संघ में रहने की आज्ञा दी जाय। अध्यक्ष ने कहा संघ आप जैसे लोगों के लिये नहीं जो एक दो दिन में संघ में रह कर फिर छोड़ देते हैं। इस पर विधवा असन्तुष्ट हो गई। १०। १२ दिन वहां रह कर उसे अपनी भूल का पता लग गया। और वापस चली गई।

टेरिसा ने पासटरेना में आकर बहिनों को हटाने का प्रवन्ध किया क्योंकि विधवा ने आगे को सहायता देने से मना कर दिया था। इसी बीच में उसके अध्यक्ष के पद का समय पूरा होने को आया उसने बहिनों से उसे चुनने के लिये मना किया। उसने उनको उपदेश देते हुए कहा - मैं इस मठ को माता के बराबर प्यार करती हूं—और तुम सब मेरी बहिनें हो। किन्तु मुझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि अब मैं और आप के

साथ नहीं रह सकती मुझे अन्य मठों का निरीक्षण करना है। तब बहिनों ने उससे अपने उत्तराधिकारी को छांटने की विन्ती की। उप अध्यक्षा जब नियुक्त हो गई तो उसने अपने आप को फिर से संघ संस्थापना के काम में लगा दिया।

अब वह प्रायः ६० वर्ष के लगभग हो गई थी। कार्य की अधिकता के कारण तथा बीमारी के कारण उसका देह बड़ा निर्बल हो गया था; किन्तु उसकी आत्मा अभी तेज थी। प्रभु के लिये प्राण तक देने को वह तत्पर थी।

सन्यासी लोग अपनी बहिनों की भांति नये मठ के आधीन नहीं थे। टेरिसा बड़ी दूरदर्शिता थी—वह जानती थी कि शीघ्र इस विषय में कलह होगा। रोम के पुरोहित सन्यासी लोगों की भक्ति और उत्साह देख कर इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने अन्य अनेक मठ बना दिये। और उन्हीं में से एक को उनके अध्यक्ष बनाने का भी निश्चय किया। जैसे ही अन्य मठ के लोगों ने यह सुना वे सब इस पर आपत्ति करने लगे। वे कलह करके अलग मठ बनाने को तैयार हो गये।

जब यह समाचार रोम पहुंचा वहां से एक व्यक्ति को कलह का निर्णय करने वहां भेजा। झगड़ा बहुत दिनों तक रहा।

टेरिसा ने उनके लिये प्रार्थना की। उसको भय होने लगा कि कहीं सब किया हुआ व्यर्थ न चला जाय। किन्तु उसका विश्वास ईश्वर पर था जो सब कुछ करने को तत्पर था।

गर्मी के दिनों में कुछ बहिनों को साथ टेरिसा 'सेमिली' नामक स्थान को गई। बन्द गाड़ी में यात्रा की गई, टेरिसा को रास्ते में भयंकर ज्वर आ गया। एक ग़रीब की झोपड़ी पास थी उसमें न खिड़कियां थी और न दरवाज़े। ऐसे स्थान में रहने से आगे ही जाना अच्छा समझा गया, जब वे 'ग्वाडला-

'कीभर' नदी को पार करते थे उनकी नाँव डूब ही गई, टेरिसा परमेश्वर की अपार कृपा से बच गई।

नदी से उतरने पर वे एक खेत में विश्राम करने लगे। थोड़ी ही देर में किसान और सिपाहियों में बड़ा द्वन्द्व हो गया। दोनों तरफ़ तलवार और भाले खड़खड़ाने लगे। स्थिति अत्यन्त भयंकर दीखने लगी। टेरिसा चुपचाप सीधे उनके बीच में खड़ी हो और आकाश की ओर अंगुली कर कहने लगी देखो वहां परमेश्वर है जो हम सब को देख रहा है और हमारा न्याय करेगा। तलवारें चलनी बन्द हो गईं। परस्पर प्रेम हो गया। सर्वत्र शान्ति छा गई।

अन्त में बड़ी कठिनता से टेरिसा अपने मठ में पहुंची और वहां रहने लगी।

कुछ ही दिनों के बाद एक और घटना घटी। महारानी ओली ने जब सुना कि टेरिसा ने अपनी जीवनी लिखी है, उससे पढ़ने के लिये मांगी। टेरिसा ने देने से मना किया। महारानी ने इसमें अपना भारी अपमान समझा। अन्त में टेरिसा को पुस्तक देनी पड़ी जो फिर टेरिसा को वापस न मिली।

राजा की मृत्यु के बाद महारानी ने टेरिसा के ऊपर झूठ बात लिखने का अभियोग लगाया। किन्तु पुरोहित लोगों ने कुछ न सुना। टेरिसा की विजय हुई।

सन्यासियों ने फिर अपने अध्यक्ष से अनुरोध किया कि टेरिसा केवल एक एक स्थान में रहे इधर उधर फिर कर अन्य मठों के काम में हस्तक्षेप न करे। उधर स्वयं सन्यासियों पर ही भयंकर आपत्ति बीतने लगी। उनके कट्टर आचरण से और एक दूसरे वैमनस्य करने से पोप ने मठ के तोड़े जाने की आज्ञा दी।

टेरिसा के दुःख की सीमा नहीं रही वह देव मंदिर में बैठकर प्रार्थना करने लगी। खाना पीना सब भूल गई केवल प्रभु के चरणों पर ही उसका ध्यान था।

एक बहिन ने आ कर उसके सामने कुछ रोटी के टुकड़े रख दिये किन्तु वह फिर भी शान्त बैठी रही। बहिन को अचानक एक अद्भुत दृश्य दिखलाई कि स्वयं प्रभु यीशु उसके सामने खड़ा है और टेरिसा को सान्त्वना दे रोटी खाने को बाध्य कर रहा है।

दूसरे दिन टेरिसा ने राजा को एक सुन्दर पत्र लिखा। सब को सत्य का ठीक ठीक पता चल गया। परस्पर फिर शान्ति स्थापित हो गई। सन्यासी मठ टूटने से बच गया। और सब मठों का निरीक्षण करने का भार एक अध्यक्ष को दिया गया।

टेरिसा को स्वतंत्रता मिल मिल गई। उसकी सहायता से संघ टूटने में बच गया।

---

(१२)

दुःख का अन्त।

सन् १५७८ ई० में टेरिसा अध्यक्ष की आज्ञा से अपने मठों का निरीक्षण करने गई। माला नाम स्थान में उसे 'लकुवा' पड़ गया। कुछ दिन विश्राम लेने के बाद वह फिर अच्छी हो गई। टोलीडो जाने पर फिर बीमार हो गई—अब के उसने विश्राम करने से मना किया, यात्रा फिर आरम्भ हुई। भेलेडोलिड पहुंचने पर उसका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया कि सब को उसके विषय में चिन्ता होने लगी।

नये मठ को स्थापित करने की आज्ञा विशप ने देना अस्वीकार किया। भयंकर रोग की अवस्था में ही सब के साथ टेरिसा ने जाने का निश्चय किया।

जाड़े का समय था। समस्त रास्ते पानी में डूब गये थे। सब ने बर्फ के ऊपर चलने में अपना श्रेय समझा। टेरिसा बार बार सब को उत्साह दिलाती थी।

बीमारी के बोझ से दबी हुई, निर्बल टेरिसा का पांव फिसल गया और वह कहने लगी, हे पिता, तू क्यों हमारे रास्ते में ऐसे अड़चन डालता है।' प्रभु ने उत्तर दिया—मेरी प्यारी बेटी तू क्यों व्यर्थ में उलहना करती है। मैं अपने भक्तों से इसी प्रकार का व्यवहार करता हूं।'

टेरिसा ने कहा—"ठीक है प्रभु ! तभी आप के इतने कम भक्त होते हैं।'

गाड़ियां कीचड़ में फंस जाने से आगे बढ़ने में और विलम्ब हो गया। भयंकर वर्षा के बीच चलकर वे एक ग्राम में पहुंचे जहां उनको रहने के लिये आश्रय मिला। बड़े विशप ने उनको आराम पहुंचाने को चेष्टा की किन्तु कोई मकान मिला नहीं।

एक दिन जब वह एक छोटी सी नदी को पार कर बाहर जाती थी—उसे नदी के बीच में खड़ी एक स्त्री मिली उसने रास्ते से हटने को कहा—किन्तु उसने न सुनकर टेरिसा को एक ऐसा धक्का मारा कि वह पानी में गिर गई और उसी हालत में प्रार्थना करने लगी।

एक दिन जब वह देवालय में पूजा के निमित्त जाती थी एक आदमी ने उसे इतना ज़ोर का धक्का दिया कि उसे मूर्छा आगई और तुरन्त डाक्टर को बुलाना पड़ा।

जाड़ों की रात बड़ी कठिनाई से व्यतीत होने लगी। भयानक ठण्डा पड़ गया था, उसमें भी वर्फ़। तमाम मकान पानी

से भर गया। खाने को कुछ नहीं था सर्वत्र में त्राहि त्राहि मच रही थी। बहिनें, टेरिसा के साथ प्रार्थना करने लगी। नगर निवासी रक्षा को आये। सब के प्राण बच गये।

टेरिसा ने घर बदला। कुछ बहिनें उसके साथ हो लीं। वह दिन पर दिन निर्बल होती जाती थी। इस कठिन रोग के हालत में भी उसने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा। वह नियमित समय में उठ कर अपना काम करती। अन्य बहिनें उसको काम करने से मना करती लेकिन वह मना करती। कभी किसी को अपने निज के काम के लिये कष्ट उठाने नहीं देती थी।

उसका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन बिगड़ता गया। बहिनों ने टेरिसा को उठा कर एक एकान्त कमरे में रक्खा। इस कमरे में समय २ पर बहिनें आकर उसे धर्म कथायें सुनाया करती थीं। और देवस्थल में सब मिलकर उसके लिये प्रार्थना करती थीं।

पांच बजे प्रातःकाल धर्म गुरू उसके निकट 'जीवन को रोटी' लेकर आये। टेरिसा का यह अन्तिम दिन था। उसके मुंह में अपूर्व शान्ति और गम्भीरता छा रही थी। उसकी छवि और मनोहर दिव्य देश को देख कर सब बड़े आश्चर्य में आ गये।

अन्तिम घड़ी समीप थी। टेरिसा ने सब से अपने अपराधों के लिये क्षमा याचना की। तमाम रात बड़े कष्ट में थी। किन्तु टेरिसा ने एक शब्द भी अपने मुह से नहीं निकाला। प्रातःकाल बहिनों ने उसे एक स्वच्छ कपड़ा पहनाया। तमाम दिन क्रूस को हाथ में लिये टेरिसा चुपचाप प्रार्थना करती रही। उसके मुह पर अपार तेज देख कर सब आश्चर्य सागर में डूब गये। सन्ध्याकाल की प्रार्थना के समय टेरिसा चुपचाप सर्वदा के लिये प्रभु यीशु के चरणों में सो गई।

The Mission Press, Allahabad.

PUBLISHED WITH THE HELP OF A GRANT GIVEN BY
THE COMMITTEE ON CHRISTIAN LITERATURE OF
THE NATIONAL CHRISTIAN COUNCIL

NORTH INDIA CHRISTIAN TRACT & BOOK SOCIETY
ALLAHABAD.

1st Edition
1,000 Copies

1936

Price 1½ Annas
मूल्य १½ आना